BAOU Education for All
NAAC ACCREDITED A++ GRADE 3.55/4
॥ चैतन्य ॥
CHAITANYA
ISSN : 2582 2802
A Refereed and Peer - Reviewed International e-Journal of Humanities and Social Sciences
by School of Humanities and Social Sciences
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad

सेपियन्स - मानव जाति का संक्षिप्त इतिहास

पुस्तक समीक्षक: डॉ. भाग्यश्री राजपूत
सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र
डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय,
अहमदाबाद
bhagyashree.rajput@baou.edu.in
bhagyashree.org@gmail.com

❖ पुस्तक की बुनियादी जानकारी:

- ☆ पुस्तक का नाम : सेपियन्स - मानव जाति का संक्षिप्त इतिहास (Sapiens: A Brief History of Humankind)
- ☆ मूल लेखक का नाम : हरारी, युवाल नोआ
- ☆ मूल प्रकाशक : डीविर पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड (इज़राइल)
- ☆ मूल भाषा : हिब्रू (2011); अंग्रेजी (2014)
- ☆ हिन्दी अनुवादक : सोनी, मदन
- ☆ प्रकाशक : मंजुल पब्लिशिंग हाउस, भोपाल
- ☆ प्रकाशन का वर्ष : 2021 (7वीं आवृत्ति)
- ☆ भाषा : हिंदी
- ☆ चित्रांकन शोध : कैरोलाइन वुड
- ☆ मानचित्र : नील गोवर
- ☆ ISBN नंबर : 978-93-88241-17-5
- ☆ पृष्ठ संख्या : 453

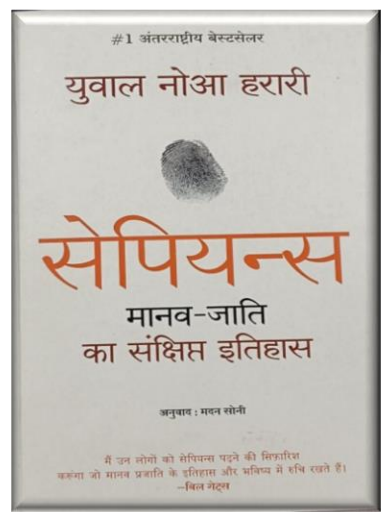

❖ पुस्तक परिचय :-

"मैं उन लोगों को सेपियन्स पढ़ने की सिफारिश
करूंगा जो मानव प्रजाति के इतिहास और भविष्य में रुचि रखते हैं।" - बिल गेट्स

बिल गेट्स का यह कथन इस पुस्तक के महत्व को बखूबी बयान करता है। युवाल नोआ हरारी द्वारा लिखित 'सेपियन्स: मानव जाति का संक्षिप्त इतिहास' एक ऐसी पुस्तक है जो पाठकों को मानव जाति के अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में गहराई से सोचने पर मजबूर करती है। यह पुस्तक सिर्फ इतिहास की एक किताब नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता के विकास के बारे में एक व्यापक और बहुआयामी विश्लेषण है। पुस्तक की सबसे खास बात यह है कि हरारी ने इतिहास को तथ्यों और आंकड़ों के आधार पर ही नहीं, बल्कि कहानियों और किस्सों के माध्यम से भी प्रस्तुत किया है। उन्होंने इतिहास को रोचक और मनोरंजक बना दिया

है। पुस्तक में हरारी ने मानव जाति को अन्य प्राणियों से अलग करने वाले कारकों का गहन अध्ययन किया है। उन्होंने बताया है कि कैसे होमो सेपियन्स ने अपनी कल्पनाशीलता और भाषा के माध्यम से समाजों का निर्माण किया, धर्मों का विकास किया और अंततः पूरी दुनिया पर अपना अधिकार जमा लिया। हरारी ने कृषि क्रांति, वैज्ञानिक क्रांति और औद्योगिक क्रांति जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का विस्तृत विश्लेषण किया है। उन्होंने इन घटनाओं के मानव जाति पर पड़े दूरगामी प्रभावों को भी उजागर किया है।

यह पुस्तक समाजशास्त्र, इतिहास, दर्शन और जीव विज्ञान जैसे विभिन्न विषयों को एक साथ जोड़ती है। यह पुस्तक उन सभी लोगों के लिए उपयोगी होगी जो मानव जाति के अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में अधिक जानना चाहते हैं। "सेपियन्स" हमें अपने अस्तित्व और इस दुनिया में अपनी भूमिका के बारे में गहराई से सोचने पर मजबूर करती है।

❖ पुस्तक का बाह्य स्वरूप :-

पुस्तक "सेपियन्स - मानव जाति का संक्षिप्त इतिहास" का बाह्य स्वरूप एक आकर्षक और अर्थपूर्ण प्रतीकात्मकता को समेटे हुए है। पुस्तक का कवर हल्के ऑफ-व्हाइट रंग की पृष्ठभूमि पर बनाया गया है, जो साधारण और शुद्धता का आभास कराता है। शीर्षक बड़े और गहरे नारंगी अक्षरों में लिखा गया है, जो ध्यान आकर्षित करता है और विषय की गहनता को रेखांकित करता है। इसके ठीक नीचे काले अक्षरों में "मानव-जाति का संक्षिप्त इतिहास" लिखा गया है, जो पुस्तक की विषयवस्तु को स्पष्ट करता है।

कवर के मध्य भाग में एक उंगली की छाप (फिंगरप्रिंट) का चित्र अंकित है, जो मानव की पहचान, विशिष्टता, प्रगति और संघर्षों का प्रतीक है। यह छवि सामाजिक-नृविज्ञान के दृष्टिकोण से मानव सभ्यता और उसकी विविधता की ओर इशारा करती है। उंगली की छाप यह भी दर्शाती है कि प्रत्येक मानव का इतिहास व्यक्तिगत और वैश्विक दोनों स्तरों पर जुड़ा हुआ है।

कवर पर लेखक का नाम "युवाल नोआ हरारी" शीर्ष पर बड़े और गहरे अक्षरों में अंकित है, जो उनकी वैश्विक प्रतिष्ठा और पुस्तक की प्रामाणिकता को दर्शाता है। हिंदी अनुवादक के रूप में मदन सोनी का नाम नीचे लिखा गया है, जो अनुवाद की गुणवत्ता और भारतीय संदर्भ के प्रति उनकी संवेदनशीलता को रेखांकित करता है।

पुस्तक के निचले हिस्से में बिल गेट्स की एक सिफारिश उद्धृत की गई है, जिसमें वे इसे पढ़ने की सलाह देते हैं। यह टिप्पणी पुस्तक की उपयोगिता को प्रमाणित करती है, एवं आधुनिक युग के संदर्भ में इसके महत्व को भी दर्शाती है।

❖ पुस्तक का आंतरिक स्वरूप :-

"सेपियन्स - मानव जाति का संक्षिप्त इतिहास" का आंतरिक स्वरूप अपने आप में ज्ञान और दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह पुस्तक मानव सभ्यता के विकास की गहन यात्रा को सरल और समझने योग्य भाषा में व्यक्त करती है। हिंदी अनुवादक मदन सोनी ने मूल लेखक युवाल नोआ हरारी के विचारों और दृष्टांतों को इस तरह से अनूदित किया है कि वे भारतीय पाठकों के लिए सुलभ और प्रभावशाली बन जाते हैं।

पुस्तक की संरचना चार मुख्य भागों में विभाजित है, जो मानव जाति के ऐतिहासिक विकास के चार महत्वपूर्ण चरणों पर आधारित हैं— संज्ञानात्मक क्रांति, कृषि क्रांति, मानव जाति का एकीकरण, और वैज्ञानिक क्रांति। हर अध्याय में विचारों की गहराई को छोटे-छोटे खंडों में प्रस्तुत किया गया है, जिससे जटिल विषय भी सहजता से समझ में आते हैं। उदाहरण के लिए, संज्ञानात्मक क्रांति का वर्णन करते समय, लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि किस प्रकार Homo sapiens ने भाषा, विचार, और

सामूहिक कल्पना के माध्यम से अन्य प्रजातियों पर विजय प्राप्त की। इसमें सामाजिक-नृविज्ञान का वह पहलू उभरकर आता है, जो मानव समुदायों के आपसी सहयोग और उनकी संस्कृति के निर्माण की व्याख्या करता है।

पुस्तक का आंतरिक स्वरूप मात्र ऐतिहासिक तथ्यों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह इन तथ्यों के पीछे के सामाजिक, सांस्कृतिक, और मनोवैज्ञानिक पहलुओं को भी उजागर करता है। उदाहरण के लिए, कृषि क्रांति का अध्याय यह समझाने का प्रयास करता है कि किस प्रकार फसलों और पालतू जानवरों पर निर्भरता ने मानव को प्रकृति का शोषक बना दिया, लेकिन इसके साथ ही समाज में असमानता और वर्ग विभाजन भी स्थापित हुए। इस दृष्टिकोण से, हर अध्याय मानव जीवन के किसी न किसी पहलू की गहरी पड़ताल करता है।

लेखक और अनुवादक ने इस पुस्तक में कई उदाहरण और कथाएं शामिल की हैं, जो इसे न केवल शिक्षाप्रद बल्कि रुचिकर भी बनाती हैं। वैज्ञानिक क्रांति के हिस्से में यह दिखाया गया है कि किस प्रकार विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने केवल हमारे जीवन को बदला नहीं, बल्कि हमारी सोचने-समझने की प्रक्रिया को भी प्रभावित किया। लेखक यह सवाल उठाते हैं कि क्या मनुष्य अब "भगवान" बनने की ओर अग्रसर है, जहां हम प्रकृति के नियमों को अपने हाथ में लेने की कोशिश कर रहे हैं।

पुस्तक का आंतरिक स्वरूप मनुष्य की सामूहिक यात्रा का दर्पण है, जिसमें समाजशास्त्र, इतिहास और मानवशास्त्र के पहलुओं का अद्भुत मेल है। यह अतीत को समझने में मदद करती है, और यह भी सिखाती है कि वर्तमान और भविष्य को बेहतर बनाने के लिए हमें अपने इतिहास से क्या सीखना चाहिए। इस दृष्टि से, "सेपियन्स" केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि मानवता के लिए आत्मनिरीक्षण का अवसर है।

❖ पुस्तक की विषय-सूची :-

"सेपियन्स - मानव जाति का संक्षिप्त इतिहास" पुस्तक चार मुख्य भागों में विभाजित है, जो मानव विकास के महत्वपूर्ण पड़ावों को दर्शाते हैं: संज्ञानात्मक क्रांति (70,000 साल पहले), कृषि क्रांति (10,000 साल पहले), मानव जाति का एकीकरण और वैज्ञानिक क्रांति (500 साल पहले)।

- **भाग-1:** संज्ञानात्मक क्रांति इस भाग में, हरारी लगभग 70,000 साल पहले हुई संज्ञानात्मक क्रांति की व्याख्या करते हैं, जिसने होमो सेपियन्स को भाषा, कल्पना और जटिल सामाजिक संरचनाओं को विकसित करने की क्षमता प्रदान की। "ज्ञान का वृक्ष" अध्याय में भाषा के विकास और मिथकों को गढ़ने की क्षमता पर प्रकाश डाला गया है, जिसने बड़े समूहों में सहयोग को संभव बनाया। काल्पनिक कहानियों और साझा विश्वासों ने आदिम समुदायों को एकजुट किया और उन्हें शिकार, रक्षा और अन्य कार्यों के लिए संगठित होने में मदद की। "आदम और ईव के जीवन का एक दिन" अध्याय में शिकारी-संग्रहकर्ता समाजों के दैनिक जीवन का चित्रण किया गया है, जो उनके सामाजिक संगठन, आहार और जीवनशैली पर अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

- **भाग-2:** कृषि क्रांति यह भाग लगभग 10,000 साल पहले शुरू हुई कृषि क्रांति के प्रभावों का विश्लेषण करता है। "इतिहास का सबसे बड़ा धोखा" अध्याय में हरारी तर्क देते हैं कि कृषि क्रांति वास्तव में एक "धोखा" थी, क्योंकि इसने मानव जीवन को अधिक कठिन और श्रमसाध्य बना दिया, जबकि शिकारी-संग्रहकर्ता जीवनशैली अपेक्षाकृत अधिक आरामदायक थी। जैसे कि,

किसानों को फसलों की देखभाल करने, खेतों की जुताई करने और जानवरों की देखभाल करने में अधिक समय और श्रम लगाना पड़ता था, जबकि शिकारी-संग्रहकर्ता भोजन की तलाश में घूमते रहते थे और अपेक्षाकृत कम काम करते थे। "पिरामिडों का निर्माण" अध्याय में कृषि अधिशेष और जटिल सामाजिक संरचनाओं के उदय के बीच संबंध की व्याख्या की गई है, जिससे राज्यों, शहरों और साम्राज्यों का विकास हुआ।

- **भाग-3:** मानव जाति का एकीकरण इस भाग में, हरारी मानव इतिहास में संस्कृतियों, साम्राज्यों और धर्मों के एकीकरण की प्रक्रिया का विश्लेषण करते हैं। "इतिहास का तीर" अध्याय में वे तर्क देते हैं कि इतिहास लगातार एकीकरण की ओर बढ़ रहा है, छोटी संस्कृतियाँ बड़ी संस्कृतियों में विलीन हो रही हैं और स्वतंत्र राज्य वैश्विक व्यवस्था में एकीकृत हो रहे हैं। "पैसे की ख़ुशबू" अध्याय में पैसे के आविष्कार और व्यापार के विकास पर प्रकाश डाला गया है, जिसने विभिन्न संस्कृतियों और समाजों के बीच आर्थिक संबंधों को बढ़ावा दिया। "मज़हब का सिद्धान्त" अध्याय में धर्मों के उदय और उनके सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव की व्याख्या की गई है, जिसने लोगों को एक साझा विश्वास प्रणाली में बांधा और बड़े साम्राज्यों के निर्माण में मदद की।

- **भाग-4:** वैज्ञानिक क्रांति यह भाग 16वीं शताब्दी में शुरू हुई वैज्ञानिक क्रांति के प्रभावों का विश्लेषण करता है, जिसने ज्ञान, प्रौद्योगिकी और समाज में अभूतपूर्व परिवर्तन लाए। "अज्ञान की खोज" अध्याय में वैज्ञानिक सोच के विकास और अज्ञानता को स्वीकार करने के महत्व पर प्रकाश डाला गया है, जिसने नई खोजों और आविष्कारों का मार्ग प्रशस्त किया। "विज्ञान और साम्राज्य का गठबन्धन" अध्याय में विज्ञान और साम्राज्यवाद के बीच संबंधों की व्याख्या की गई है, जहाँ वैज्ञानिक प्रगति ने यूरोपीय शक्तियों को दुनिया भर में अपने प्रभाव का विस्तार करने में मदद की। "उद्योग के पहिये" अध्याय में औद्योगिक क्रांति के प्रभावों का विश्लेषण किया गया है, जिसने उत्पादन, परिवहन और संचार में क्रांति ला दी और मानव जीवन को गहराई से बदल दिया।

- **"वह प्राणी, जो एक ईश्वर बन गया"** - उपसंहार में, हरारी, जैव प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अन्य तकनीकों के माध्यम से मानव जाति के संभावित विकास पर चर्चा करते हैं, जिससे मनुष्य "ईश्वर" जैसे बन सकते हैं। हरारी ने यह सवाल उठाया है कि क्या होमो सेपियन्स अपनी शक्तियों के दुरुपयोग के कारण अपने ही अंत का कारण बनेगा।

❖ शैली एवं भाषा :-

इस पुस्तक "सेपियन्स - मानव जाति का संक्षिप्त इतिहास" की भाषा सरल, प्रवाहमय और सटीक है, जिससे गहन और जटिल विषयों को भी आसानी से समझा जा सकता है। अनुवादक मदन सोनी ने मूल अंग्रेजी पाठ के निहितार्थ को पूरी ईमानदारी और गहराई से हिंदी में प्रस्तुत किया है, जिससे यह पुस्तक भारतीय पाठकों के लिए सहज और प्रभावशाली बन गई है। लेखक युवाल नोआ हरारी ने समाजशास्त्रीय, ऐतिहासिक और मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण को अत्यधिक रोचक और कहानीनुमा शैली में प्रस्तुत किया है। उनकी शैली में वैज्ञानिक तथ्यों, ऐतिहासिक घटनाओं और मानव-जीवन की दार्शनिक व्याख्याओं का अद्भुत समन्वय है। उदाहरण के तौर पर, जब वे कृषि क्रांति के प्रभाव की बात करते हैं, तो इसे ऐतिहासिक घटनाक्रम के साथ-साथ समाजशास्त्रीय परिवर्तन के रूप में व्याख्यायित करते हैं, जो मानव-जीवन की संरचना और समाज के स्वरूप को बदलने वाला निर्णायक मोड़ था।

पुस्तक की शैली संवादात्मक और विचारोत्तेजक है। लेखक पाठक से सीधे संवाद करते हुए प्रश्न उठाते हैं, जैसे – "क्या हम वाकई कृषि क्रांति से बेहतर जीवन जीने लगे?" इस प्रकार की प्रश्नात्मक शैली पाठकों को सोचने और पुस्तक के साथ एक संवाद स्थापित करने के लिए प्रेरित करती है। पुस्तक में वैज्ञानिक और ऐतिहासिक संदर्भों को स्पष्ट करने के लिए सरल उपमाओं और उदाहरणों का सहारा लिया गया है। जब लेखक बताता है कि कैसे "हमें काल्पनिक व्यवस्थाओं पर विश्वास करने की क्षमता ने हमारी प्रजाति को अन्य जीवों से अलग किया," तो वे धर्म, राष्ट्र, और मुद्रा जैसी व्यवस्थाओं का उल्लेख करते हैं। यह शैली पाठक को विषय के व्यापक सामाजिक-नृविज्ञानिक आयामों को समझने में मदद करती है। "नियंडरथल" और "होमो सेपियन्स" जैसे जटिल शब्दों को भी संदर्भित और सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें समाज, संस्कृति, और मानव-जीवन की विविधता का जीवंत चित्रण भी मिलता है। लेखक का गहन विश्लेषण और अनुवादक की कुशलता इसे एक ऐसा अनुभव प्रदान करती है, जो बौद्धिक और भावनात्मक दोनों स्तरों पर पाठकों को छू जाती है।

❖ पुस्तक में दर्शाए गए महत्वपूर्ण तथ्य :-

- ✰ संज्ञानात्मक क्रांति अध्याय के आरम्भ में ही दक्षिण फ़्रांस की शोवे- पों- द गुफ़ा में लगभग तीस हज़ार साल पहले बनी एक मनुष्य के हाथ की छाप को दिखाया गया है तथा यह भी लिखा गया है कि, “किसी ने यह कहने की कोशिश की थी कि मैं यहाँ था।” (p.9)
- ✰ सेपियन्स में ज़िक्र है कि लगभग 14 अरब वर्ष पहले पदार्थ, ऊर्जा, देश और काल उस घटना की वजह से अस्तित्व में आए थे, जिसे बिग बैंक के नाम से जाना जाता है । (p.11)
- ✰ मनुष्यों की आखिरी बौनी प्रजाति 12,000 साल पहले खत्म हो गई थी। (p.27)
- ✰ कुत्ता लगभग 15,000 साल पहले मनुष्यों द्वारा पालतू बनाया गया पहला जानवर था। (p.56)
- ✰ लगभग 14 अरब वर्ष पहले पदार्थ, ऊर्जा, देश और काल उस घटना की वजह M से अस्तित्व से अस्तित्व में आए थे, जिसे 'बिग बैंग' के नाम से जाना जाता है। (p.11)
- ✰ 300,000 साल पहले तक आते-आते होमो इरेक्टस, निएंडरथल और होमो सेपियन्स के पूर्वज नियमित रूप से आग का इस्तेमाल करने लगे थे। (p.20)
- ✰ मध्यपूर्व और यूरोप की आधुनिक आबादियों के विशिष्ट (यूनिक) मानवीय डीएनए का 1.4 प्रतिशत निएंडरथल्स का डीएनए है। (p.24)
- ✰ बौने-नुमा अन्तिम मानव फ़्लोरेस के द्वीप से लगभग 12,000 साल पहले गायब हुए। वे अपने पीछे कुछ अस्थियाँ, कुछ पत्थर के औज़ार, हमारे डीएनए में कुछ जीन और ढेर सारे अनुत्तरित प्रश्न छोड़ गए। वे हम होमो सेपियन्स के पीछे अन्तिम मानव प्रजाति को भी छोड़ गए। (p.27)
- ✰ न्यू गिनी के उत्तर में न्यू आयलैंड में रहे सेपियन्स के समुदाय ख़ास तौर से तेज़ धार वाले औज़ार गढ़ने के लिए ऑब्सीडियन नामक ज्वालामुखीय काँच का इस्तेमाल किया करते थे। (p.45)
- ✰ अँग्रेज़ों की फ़तह के पहले, इस महाद्वीप पर 300,000 और 700,000 के बीच की संख्या में शिकारी-संग्रहकर्ता रहा करते थे, जो 200-600 जनजातियों में बँटे थे, जिनमें से प्रत्येक जनजाति अनेक क़बीलों में विभाजित थी। (p.54)
- ✰ कुत्तों का इस्तेमाल शिंकार और लड़ाई के लिए और जंगली जानवरों तथा घुसपैठिया इंसानों के विरुद्ध चेतावनी व्यवस्था के तौर पर किया जाता था। (p.56)
- ✰ डेन्यूब घाटी में पूर्व-कृषि युग के बहुत-से स्थलों से मिले 400 कंकालों के एक तीसरे सर्वेक्षण में अठारह कंकालों में हिंसा के साक्ष्य पाए गए। 400 में से अठारह की संख्या बहुत बड़ी नहीं लग सकती, लेकिन यह एक बड़ा प्रतिशत है। अगर वे अठारह के अठारह हिंसा का शिकार होकर मरे थे, तो इसका यह अर्थ होगा कि डेन्यूब घाटी में 4.5 प्रतिशत मौतें मानवीय हिंसा की वजह से हुई थीं। (p.71)

- ☆ 45,000 साल पहले ऑस्ट्रेलिया में युकेलिप्टस वृक्ष बहुत दुर्लभ हुआ करते थे। (p.79)
- ☆ संज्ञानात्मक क्रान्ति के समय यह ग्रह ज़मीन पर रहने वाले 50 किलोग्राम से ज़्यादा वज़न वाले स्तनधारियों की लगभग 200 क़िस्मों का घर हुआ करता था। (p.84)
- ☆ 221 ईसा पूर्व में चिन राजवंश ने चीन को एकीकृत किया और इसके कुछ ही समय बाद रोम ने भूमध्यसागरीय बेसिन को एकीकृत किया। (p.117)
- ☆ 1776 ईसा पूर्व में बेबीलोन दुनिया का सबसे बड़ा नगर था। (p.118)
- ☆ 3500 ईसा पूर्व और 3000 ईसा पूर्व के बीच के वर्षों में कुछ अज्ञात सुमेरियाई धुरन्धरों ने मानव-मस्तिष्क से बाहर सूचना को संचित और प्रोसेस करने की एक पद्धति ईजाद कर ली, एक ऐसी पद्धति जो गणितीय आँकड़ों का बड़ी तादाद में प्रबंधन करने के लिए ही विशेष रूप से बनी थी। (p.137)
- ☆ बहुत से अध्येताओं का अनुमान है कि हिन्दू जाति-व्यवस्था ने तब रूप लिया था, जब लगभग 3000 साल पहले इंडो-आर्यन कौम ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण कर वहाँ के स्थानीय लोगों को अपने अधीन कर लिया था। (p.154)
- ☆ मुट्ठी भर स्त्रियों ने अपनी प्रमुख हैसियत बनाई है, जैसे कि मिस्र की क्लियोपेट्रा, चीन की साम्राज्ञी वू ज़ेतियन (700 ईसवी) और इंग्लैंड की एलिज़ाबेथ प्रथम, लेकिन ये ऐसे अपवाद हैं, जिनसे सामान्य स्थिति पर कोई फर्क नहीं पड़ता। (p.170)
- ☆ अफ़्रीका, दक्षिण एशिया और समुद्री महाद्वीपों में 4000 वर्षों तक पैसे के रूप में कौड़ियों का इस्तेमाल होता रहा। (p.194)
- ☆ इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भ में दुनिया अभी लगभग दो सौ राष्ट्रों में बँटी हुई है, लेकिन इनमें से कोई भी सच्चे अर्थों में स्वतंत्र नहीं है। ये सभी एक दूसरे पर निर्भर हैं। (p.225)
- ☆ एकेश्वरवादी मज़हबों का पहला सिद्धान्त है, 'ईश्वर का अस्तित्व है। वह मुझसे क्या चाहता है'? बौद्धों का पहला सिद्धान्त है, 'दुःख का अस्तित्व है। मैं इससे कैसे मुक्ति पाऊँ'? (p.245)
- ☆ सोलहवीं सदी के पहले किसी मनुष्य ने जलमार्ग से पृथ्वी का भ्रमण नहीं किया था। इस स्थिति में बदलाव आया 1522 में जब मैगेलन का जहाज़ 72,000 किलोमीटर की यात्रा करने के बाद स्पेन लौटा। (p.270)
- ☆ 1687 में आइजैक न्यूटन ने द मैथामेटिकल प्रिंसिपल्स ऑफ़ नेचुरल फ़िलॉसफ़ी पुस्तक प्रकाशित की थी, जिसे तर्कसंगत ढंग से आधुनिक इतिहास का सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ कहा जा सकता है। (p.278)
- ☆ 1620 में फ्रांसिस बैकन ने द न्यू इन्स्ट्रूमेंट नाम से एक वैज्ञानिक घोषणा-पत्र प्रकाशित किया था। इसमें उसने दावा किया था कि 'ज्ञान शक्ति है'। (p.282)
- ☆ दो शक्तियाँ ख़ास तौर से ऐसी हैं, जिनकी ओर हमें ध्यान देना आवश्यक है : साम्राज्यवाद और पूँजीवाद। (p.298)
- ☆ मृत तस्मानियों के शव विज्ञान के नाम पर मानवशास्त्रियों और संग्राहकों द्वारा ज़ब्त कर लिए जाते। उनकी चीरफाड़ की जाती, उन्हें नापा-तौला जाता और विद्वत्तापूर्ण लेखों में उनका विश्लेषण किया जाता। इसके बाद उनकी खोपड़ियाँ और कंकाल संग्रहालयों और मानविकीय संग्रहों में प्रदर्शित की जातीं। 1976 में जाकर ही तस्मानियन म्यूज़ियम ने अन्तिम मूल तस्मानियाई टुगानिनी औरत का कंकाल दफ़नाए जाने के लिए सौंपा था। अक्सर ऐसा माना जाता है कि यह पूर्ण रूप से मूल तस्मानियाई रक्त वाली अंतिम इंसान थी, जिसकी मृत्यु सौ साल पहले हुई थी। (p.302)
- ☆ 1750 में यूरोप, चीन और मुस्लिम जगत के बीच ऊपरी तौर पर जो समानता दिखाई दे रही थी, वह एक भ्रम था। (p.306)

- ☆ 1405 और 1433 के बीच झेंग ने चीन से हिन्द महासागर के सुदूर विस्तार तक सात विशाल जहाज़ी बेड़ों का नेतृत्व किया था। इनमें सबसे बड़े बेड़े में लगभग 300 जहाज़ और उनमें सवार लगभग 30,000 लोग शामिल थे। (p.315)
- ☆ मोहेनजो-दड़ो उस सिन्धु घाटी सभ्यता का एक प्रमुख नगर था, जो 3000 ईसा पूर्व में फली-फूली थी और ईसा पूर्व 1900 के आस-पास नष्ट हुई थी। (p.323)
- ☆ नस्लवाद का स्थान 'संस्कृतिवाद' ने ले लिया, हालाँकि ऐसा कोई शब्द नहीं है, लेकिन वक्त के साथ हमने इसे गढ़ लिया। आज का अभिजात्य वर्ग नस्लों में जैविक अंतर के आधार पर नहीं, बल्कि संस्कृतियों में ऐतिहासिक अंतर के आधार पर श्रेष्ठता को न्यायसंगत ठहराता है।(p.328)
- ☆ सोलहवीं सदी से लेकर उन्नीसवीं सदी तक लगभग 1 करोड़ अफ्रीकी गुलाम अमेरिका लाए गए। इनमें लगभग 70 प्रतिशत गन्ने के खेतों में काम करते थे। (p.358)
- ☆ आज पृथ्वी के महाद्वीप लगभग 7 अरब सेपियन्स के घर हैं। (p.379)
- ☆ चीन के मिंग साम्राज्य (1368-1644) में आबादी बाओजिया पद्धति के मुताबिक़ संगठित थी।(p.387)
- ☆ 1945 में ब्रिटेन एक चौथाई भूमण्डल पर राज्य करता था। (p.398)
- ☆ कम्युनिस्ट चीन के 1958-61 के 'ग्रेट लीप फ़ारवर्ड' के दौरान 1 करोड़ से 5 करोड़ के बीच मनुष्य भूख से मर गए थे। (p.409)
- ☆ आतंक और अत्याचार से भरी दुनिया के बारे में लिखे गए एल्डस हक्सले के उपन्यास 'ब्रेव न्यू वर्ल्ड' में सुख सबसे बड़ा मूल्य है और मानसिक रोगों से सम्बन्धित दवाएँ राजनीति की बुनियाद के तौर पर पुलिस और मतपत्र की जगह ले लेती हैं। (p.421)
- ☆ 2,500 सालों तक बौद्धों ने सुख के तत्त्व और कारणों का विधिवत अध्ययन किया है, यही वजह है कि उनके दर्शन और ध्यान-पद्धतियों में वैज्ञानिक समुदाय के बीच लगातार दिलचस्पी बढ़ी है। (p.425)
- ☆ 2005 में स्थापित मानव मस्तिष्क परियोजना (ह्यूमन ब्रेन प्रोजेक्ट) को उम्मीद है कि वह कम्प्यूटर के भीतर एक सम्पूर्ण मानव-मस्तिष्क की पुनर्रचना कर लेगी, जिसमें कम्प्यूटर के इलेक्ट्रॉनिक सर्किट मस्तिष्क के स्नायुविक नेटवर्क की बराबरी करेंगे। (p.442)
- ☆ हमने डोंगी से लेकर लम्बी नाव तक और उससे लेकर भाप से चलने वाले जहाज़ों और अन्तरिक्ष शटल तक प्रगति की है, लेकिन कोई नहीं जानता कि हम कहाँ जा रहे हैं। (p.450)

❖ प्रस्तुतीकरण :-

पुस्तक "सेपियन्स - मानव जाति का संक्षिप्त इतिहास" में कथा को बढ़ाने और दृश्य संदर्भ प्रदान करने के लिए कई चित्र और तस्वीरें शामिल हैं। ये छवियां सभी अध्यायों में बिखरी हुई हैं, जिनमें ऐतिहासिक कलाकृतियों, प्राचीन मानचित्रों और सामाजिक परिवर्तनों के चित्रण जैसे विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। एक महत्वहीन प्राणी (An Animal of No Significance) अध्याय में, 30,000 साल पहले बनाई गई मानव हस्तचिह्न की छवि मानव आत्म-अभिव्यक्ति और अमूर्त विचार के आगमन का प्रतीक है। दक्षिणी फ्रांस में चौवेट-पोंट-डी'आर्क गुफा की दीवार पर लगभग 30,000 साल पहले

एक मानव हाथ का निशान।

बनाया गया एक मानव हाथ का निशान। किसी ने कहने की कोशिश की, 'मैं यहाँ था!'

ज्ञान का वृक्ष (The Tree of Knowledge) अध्याय में "सिंह-पुरुष" की हाथीदांत से बनी मूर्ति दर्शाई गई है, जो लगभग 32,000 वर्ष पुरानी है। यह मूर्ति मानवीय कल्पना की शक्ति को प्रदर्शित करती है। यह उस समय की धार्मिक आस्थाओं और कला के विकास को रेखांकित करती है। यह छवि दिखाती है कि कैसे मानव ने वास्तविकता से परे की चीज़ों की कल्पना करना शुरू किया। कृषि क्रांति" में ऐसे चित्र हैं जो कृषि क्रांति की कहानी बताते हैं। इन चित्रों में प्राचीन सभ्यताओं की कला और स्थापत्य की झलकियाँ हैं, जैसे मिस्र के पिरामिड और सिंधु घाटी के भंडार। ये चित्र दिखाते हैं कि कैसे कृषि और कृषि ने मानव जीवन को बदल दिया।

सिंह-पुरुष

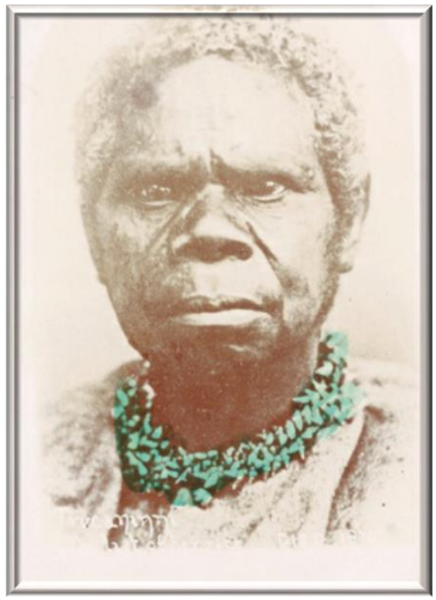

ट्रुगनिनी, अंतिम मूल तस्मानियाई।

निएंडरथल बच्चे का एक काल्पनिक पुनर्निर्माण।

ट्रुगनिनी जो तस्मानिया की अंतिम मूल निवासी थीं, आदिवासी समुदायों के विलुप्त होने की कहानी को दर्शाती हैं। यह चित्र हमें मानव जाति के उत्थान और पतन की घटनाओं को समझने में मदद करता है, जो ऐतिहासिक विस्थापन, उपनिवेशवाद और सांस्कृतिक हानि से जुड़े हैं।

कैलिफोर्निया में गोल्ड रश (सोने की धमन) के दौरान खनन करने वाले श्रमिकों की छवियाँ एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षण को दर्शाती हैं। 1849 में कैलिफोर्निया ने अपनी समृद्धि सोने से बनाई थी, जबकि आजकल सिलिकॉन वैली की समृद्धि सिलिकन (चिप्स) के उद्योग पर निर्भर है। इस प्रकार, सोने की खदानों और आधुनिक तकनीकी संस्थानों के बीच यह अंतर सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों को दर्शाता है।

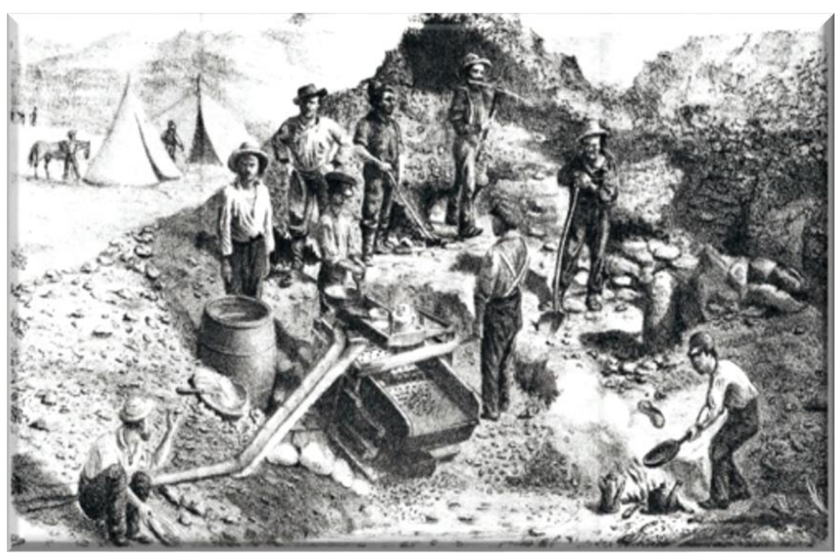

कैलिफोर्निया में सोने की खदानें

प्राचीन मिस्र के समृद्ध वर्ग ने अपने धन का उपयोग इस भव्य पिरामिड को बनाने में किया। यह पिरामिड केवल एक शाही दफन स्थल नहीं था, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक शक्ति का प्रतीक भी था। इस प्रकार के निर्माण कार्यों से यह सिद्ध होता है कि कैसे समाज की उच्च जाति ने अपनी सामर्थ्य और संपत्ति को प्रदर्शित किया।

गीज़ा का महान पिरामिड

❖ पुस्तक का समाजशास्त्रीय महत्व :-

यह पुस्तक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से मानवता के इतिहास को एक नई दृष्टि प्रदान करती है, जो हमें यह समझने में मदद करती है कि कैसे मानव समाज ने छोटे-छोटे समूहों से विशाल साम्राज्यों और आधुनिक राष्ट्र-राज्यों का रूप लिया। युवाल नोआ हरारी द्वारा लिखित इस पुस्तक में यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार मानव ने भाषा, मिथकों और विश्वासों के माध्यम से समाज को संगठित किया। यह विचार समाजशास्त्र के उन सिद्धांतों से जुड़ता है जो सामाजिक संरचनाओं और उनकी गतिशीलता का अध्ययन करते हैं। पुस्तक में वर्णित है कि कैसे "कल्पित वास्तविकताएं" जैसे धर्म, पैसा और कानून ने बड़े पैमाने पर मानव समुदायों को एकजुट किया। समाजशास्त्रीय दृष्टि से, यह मानव समाजों की सामाजिक एकजुटता (social cohesion) और नियंत्रण के तरीकों का अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है।

पुस्तक का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू कृषि क्रांति का वर्णन है, जिसमें मानव शिकारी-संग्राहक समाज से स्थायी कृषि समाज में परिवर्तित हुआ। यह समाजशास्त्र और नृविज्ञान के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि यह मानवता की सामाजिक असमानता, वर्ग संरचना, और संपत्ति की अवधारणा के विकास का आधार है। हरारी यह बताते हैं कि कैसे कृषि ने समाजों में श्रम विभाजन और सत्ता के केंद्रीकरण को जन्म दिया, जो आधुनिक समाजों में असमानताओं की जड़ है। इसके अतिरिक्त, पुस्तक में औद्योगिक क्रांति और वैज्ञानिक क्रांति के प्रभावों का विश्लेषण भी समाजशास्त्रीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह दिखाया गया है कि इन क्रांतियों ने न केवल उत्पादन और उपभोग के तरीकों को बदला, बल्कि सामाजिक रिश्तों और मानव-मूल्य प्रणालियों को भी प्रभावित किया। उदाहरण के लिए, आधुनिक उपभोक्तावाद और पूंजीवाद का उदय मानव समाज के आर्थिक और सांस्कृतिक आयामों पर गहरी छाप छोड़ता है, जो समाजशास्त्रियों के अध्ययन के लिए एक समृद्ध क्षेत्र प्रदान करता है। पुस्तक के माध्यम से यह भी स्पष्ट होता है कि विज्ञान और तकनीक ने न केवल मानव समाज के भौतिक पहलुओं को बदला, बल्कि नैतिकता और अस्तित्व से जुड़े सवालों को भी गहरा किया। यह समाजशास्त्रीय और नृविज्ञान दोनों ही दृष्टिकोण से एक प्रमुख विषय है, क्योंकि यह मानवता के भविष्य और उसकी सामाजिक संरचनाओं पर सवाल उठाता है।

"सेपियन्स" का समाजशास्त्रीय महत्व इस बात में है कि यह मानवता के इतिहास को केवल घटनाओं का क्रम मानने के बजाय इसे सामाजिक संरचनाओं, विश्वास प्रणालियों, और सांस्कृतिक प्रथाओं के जटिल ताने-बाने के रूप में प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक अतीत को समझने का एक साधन है, एवं वर्तमान सामाजिक संरचनाओं और भविष्य की संभावनाओं पर गहराई से विचार करने का अवसर भी देती है।

❖ पुस्तक के सकारात्मक पहलू :-

युवल नोआ हरारी लिखित और मदन सोनी द्वारा किए गए अनुवादित पुस्तक "सेपियन्स" निस्संदेह 21वीं सदी की सबसे प्रभावशाली पुस्तकों में से एक है।

लेखक युवाल नोआ हरारी ने समाजशास्त्र, इतिहास, मानवशास्त्र, और जीवविज्ञान को जोड़कर मानव जाति के विकास की कहानी को सरल और रोचक भाषा में प्रस्तुत किया है। वे यह समझाते हैं कि कृषि क्रांति ने मानव के भौतिक जीवन को बदला, सामाजिक असमानता और जटिल राजनीतिक संरचनाओं का आधार भी तैयार किया। यह विश्लेषण न केवल ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट करता है, बल्कि आज की सामाजिक संरचनाओं को समझने में भी मदद करता है। हरारी ने मानव के विकास को केवल घटनाओं के वर्णन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उनकी जड़ें जैविक और आनुवंशिक संदर्भों में भी तलाश की हैं। यह दृष्टिकोण एक समाजशास्त्री और मानवशास्त्री के लिए अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि यह दिखाता है कि कैसे मानव की जैविक विशेषताएं उसकी सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक परंपराओं को प्रभावित करती हैं।

दूसरा सकारात्मक पहलू पुस्तक का वैश्विक दृष्टिकोण है। यह एक क्षेत्र या संस्कृति के इतिहास तक सीमित नहीं है, अपितु पूरे विश्व में मानव जाति के सामूहिक अनुभव को समेटे हुए है। हरारी ने शिकार-और-संग्रहकर्ता काल से लेकर सूचना युग तक, मानव की यात्रा को इस तरह प्रस्तुत किया है कि पाठक को मानव सभ्यता के हर चरण का महत्व समझ में आता है। पुस्तक में बताया गया है कि कैसे कल्पनाशील सोच ने मिथकों, धर्मों, और संस्थाओं के निर्माण में योगदान दिया, जिससे बड़े पैमाने पर सामाजिक सहयोग संभव हो सका।

तीसरा महत्वपूर्ण पहलू है पुस्तक का आलोचनात्मक दृष्टिकोण। यह पाठकों को आम धारणाओं और ऐतिहासिक मिथकों पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित करती है। हरारी ने यह विचार प्रस्तुत किया है कि कृषि क्रांति को मानव जाति के लिए "सबसे बड़ी छलांग" माना जाता है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप श्रम का विभाजन, सामाजिक असमानता और पर्यावरणीय क्षरण भी हुआ। यह दृष्टिकोण पाठकों को विकास और प्रगति की पारंपरिक धारणाओं को पुनर्विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

❖ पुस्तक की सीमाएँ :-

यह पुस्तक निश्चित रूप से कई क्षेत्रों में उत्कृष्ट है, लेकिन इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं जिन पर समाजशास्त्रीय और मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से विचार करना आवश्यक है। सबसे पहली सीमा यह है कि, हरारीने कृषि क्रांति को "इतिहास का सबसे बड़ा धोखा" कहकर व्यक्त किया गया है। जबकि कृषि क्रांति के परिणामस्वरूप विकासित समाजों ने अपने सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं में कई नवाचार किए थे। इस दृष्टिकोण में किसी भी प्रकार की बहुलता या वैकल्पिक विचारधारा की कमी है। प्रत्येक संस्कृति का अपना अनूठा इतिहास और विश्वदृष्टि होती है, जो वैश्विक प्रक्रियाओं को अलग-अलग तरीकों से प्रभावित करती है। 'सेपियन्स' में इस विविधता को कम करके आंका गया है, जिससे मानव इतिहास का एक अधूरा चित्र प्रस्तुत होता है। आदिम मानवों के समाज और उनके सामाजिक संरचनाओं को बहुत सामान्य रूप में प्रस्तुत किया है, बिना यह समझे कि उन समाजों में भी विविधताएँ थीं।

दूसरी सीमा यह है कि "सामूहिक कल्पनाएँ" जैसे विचार पर जोर देते हुए लेखक ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि मानव समाज मिथकों और कहानियों पर आधारित है। जबकि यह सामाजिक संरचनाओं की जटिलता को संपूर्ण रूप से समझाने में असमर्थ प्रतीत होता है। हरारी की संज्ञानात्मक क्रांति की अवधारणा भाषा और प्रतीकात्मक सोच के विकास पर केंद्रित है, लेकिन सामाजिक संरचनाओं और शक्ति संबंधों की भूमिका को अपेक्षाकृत कम महत्व दिया गया है। जब हरारी मनुष्य के इतिहास को 'शिकारियों और संग्राहकों' के दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं, तो वह उस सामाजिक संदर्भ को भूल जाते हैं, जिसमें अलग-अलग समुदायों के अंदर विविधता थी।

इन सीमाओं के बावजूद, यह पुस्तक मानव इतिहास में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए मूल्यवान योगदान है।

❖ समीक्षक का मूल्यांकन और निष्कर्ष :-

"सेपियन्स" एक विचारोत्तेजक और व्यापक पुस्तक है जो मानव इतिहास को एक नए परिप्रेक्ष्य से देखने के लिए प्रेरित करती है। सेपियंस को इतना सफल बनाने वाली बात यह है कि हम एकमात्र ऐसे जानवर हैं जो बड़े पैमाने पर सहयोग करने में सक्षम हैं। पुस्तक में उठाए गए कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न इस प्रकार हैं: हम कौन हैं? हम कहाँ से आए हैं? और हम कहाँ जा रहे हैं? हरारी इन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करते हैं, लेकिन वे यह भी स्वीकार करते हैं कि कुछ प्रश्नों के उत्तर अभी भी अज्ञात हैं। वे मानव इतिहास को एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखते हैं, जो अभी भी जारी है, और वे हमें इस प्रक्रिया में अपनी भूमिका पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। संक्षेप में, "सेपियन्स - मानव जाति का संक्षिप्त इतिहास" एक ऐसी पुस्तक है जिसे हर व्यक्ति को एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए। यह पुस्तक हमें यह समझने में मदद करती है कि हम कहां से आए हैं और हम कहां जा रहे हैं। यह पुस्तक हमें अपने आप को और अपनी दुनिया को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है।

❖ संदर्भ :-

1. सोनी, मदन (2021 - 7वीं आवृत्ति) 'सेपियन्स - मानव जाति का संक्षिप्त इतिहास'; प्रकाशक: मंजुल पब्लिशिंग हाउस, भोपाल; ISBN नंबर: 978-93-88241-17-5